Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPSC – IAS

सिविल सेवा परीक्षा

संघ लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

पेपर I – भाग – 3

आधुनिक भारत का इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

पेपर -1 भाग - 3

आधुनिक भारत का इतिहास

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन** • यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक • भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग के खोज के कारण • विदेशी शक्तियां ○ पुर्तगाली ○ डच ○ ईस्ट इण्डिया कंपनी का गठन एवं ढाँचा ○ फ्रांसीसीयों का आगमन ○ डेनिश का भारत में आगमन • कर्नाटक युद्ध • अन्य यूरोपीय शक्ति के खिलाफ अंग्रेजी की सफलता के कारण	**1**
2.	**मुगल साम्राज्य का पतन** • विदेशी आक्रमण ○ नादिर शाह का आक्रमण (1739) ○ अहमद शाह अब्दाली (या अहमद शाह दुर्रानी) • उत्तर कालीन मुगल साम्राज्य • मुगल साम्राज्य के पतन के कारण	**12**
3.	**नए राज्यों का उदय** • उत्तराधिकारी राज्य • योद्धा राज्य • स्वतंत्र राज्य	**17**
4.	**भारत में ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विस्तार** • वणिकवाद • प्राच्यवाद (ओरिएण्टलिज्म) • भारत में ब्रिटिश विस्तार की विशेषताए • बंगाल ○ मुर्शिदकुली खाँ (1717 1727 ई.) ○ अलीवर्दी खाँ (1740 1756 ई.) ○ सिराज उद् दौला (1756 57 ई.) ○ ब्लैक होल घटना (20 जून, 1756) ○ प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ई.) • प्लासी के युद्ध के परिणाम ○ राजनीतिक परिणाम ○ आर्थिक परिणाम	**21**

- ○ सैनिक परिणाम
  - ○ नवाब के रूप में मीर जाफर का काल (1757 60)
  - ○ नवाब के रूप में मीर कासिम (1760   63 ई.)
  - ○ बक्सर का युद्ध (अक्टूबर 1764)
- बक्सर के युद्ध के परिणामः
  - ○ इलाहाबाद की संधि (12 अगस्त 1765 ई.)
    1. अवध के नवाब के साथ संधि
    2. मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के साथ संधि एवं शर्तें
    3. बंगाल के नये नवाब नजमुद्दौला के साथ संधि
  - ○ बंगाल में द्वैध शासन
  - ○ कम्पनी द्वारा द्वैध शासन की नीति अपनाने के कारण (औचित्य/निहितार्थ)
  - ○ द्वैध शासन के परिणाम
  - ○ द्वैध शासन का अंत
- मैसूर
  - ○ वाडियार राजवंश
  - ○ हैदर अली का उदय
  - ○ आंग्ल मैसूर युद्ध
  - ○ टीपू सुल्तान (1782 1799 ई.)
  - ○ टीपू सुल्तान के बाद मैसूर
- मराठा
  - ○ आंग्ल मराठा युद्ध
  - ○ मराठों की असफलता के कारण
  - ○ पंजाब
  - ○ रणजीत सिंह (1780 1839)
  - ○ अमृतसर की संधि (25 अप्रैल 1809 ई.)
  - ○ आंग्लसिक्ख युद्ध
- सिंध
  - ○ तालपुर के अमीर
  - ○ सहायक गठबंधन की स्वीकृति (1839)
- अवध
- पड़ोसी देशों में ब्रिटिश विस्तार
  - ○ आंग्ल अफ़ग़ान संबंध
  - ○ प्रथम आंग्ल अफ़ग़ान युद्ध (1839-42)
  - ○ दूसरा अफगान युद्ध
  - ○ तीसरा आंग्ल अफगान युद्ध
  - ○ नेपाल के साथ सम्बन्ध
  - ○ आंग्ल बर्मा सम्बन्ध
  - ○ आंग्ल तिब्बत सम्बन्ध
  - ○ ब्रिटिश और उत्तर पश्चिम सीमांत (NWF)
- ब्रिटिश की विस्तार नीतिया
  - ○ कंपनी और भारतीय रियासतें
    1. घेरे की नीति

	2. अधीनस्थ पार्थक्य की नीति 3. अधीनस्थ संघ की नीति (1858 -1935) 4. सहायक गठबंधन की नीति 5. सहायक गठबंधन का उपयोग 6. व्यपगत का सिद्धांत 6. चालाकीपूर्ण निष्क्रियता की नीति 7. प्राउड रिजर्व की नीति	
5.	**1857 तक प्रशासनिक संगठन** • ब्रिटिश प्रेसीडेंसीयाँ ○ बंगाल प्रेसीडेंसी ○ मद्रास प्रेसीडेंसी ○ बॉम्बे प्रेसीडेंसी • 1857 तक संवैधानिक, प्रशासनिक और न्यायिक विकास ○ 1773 का रेगुलेटिंग एक्ट ○ एक्ट ऑफ़ सेटेलमेंट 1781 ○ पिट्स इंडिया ऐक्ट, 1784 ○ 1793 का चार्टर अधिनियम ○ रेग्युलेटिंग अधिनियम और चार्टर अधिनियम में अंतर ○ 1813 का चार्टर एक्ट ○ चार्टर अधिनियम 1833 ○ 1853 का चार्टर एक्ट	**46**
6.	**1857 का विद्रोह** • 1857 के विद्रोह का महत्व • 1857 के विद्रोह के कारण ○ राजनीतिक प्रशासनिक कारण ○ आर्थिक कारण ○ सामाजिक सांस्कृतिक कारण ○ सैन्य कारण ○ बाहरी घटनाओं का प्रभाव ○ तात्कालिक कारण • प्रसार ○ सिपाही विद्रोह ○ नागरिक विद्रोह ○ विद्रोह के मुख्य केंद्र • 1857 के विद्रोह के दौरान क्षेत्रीय नेता • अज्ञात शहीद • विद्रोह का दमन • विद्रोह से जुड़े ब्रिटिश सेना के अधिकारी • असफलता के कारण • विद्रोह का प्रभाव • विद्रोह की प्रकृति	**51**
7.	**1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन** • भारत सरकार अधिनियम 1858	**59**

	• भारत परिषद अधिनियम 1861
	• तीन दिल्ली दरबार
	• सिविल सेवा में परिवर्तन
	• सेना में परिवर्तन
	• रियासतों के साथ संबंध
	• श्रम कानून
	  ○ भारतीय कारखाना अधिनियम, 1881
	  ○ भारतीय कारखाना अधिनियम, 1891
	• भारत परिषद् अधिनियम 1892	

8.	**सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन (19वीं सदी)**
	• कारण
	• प्रमुख समाज सुधारक
	  ○ राजा राममोहन राय (1774-1833)
	  ○ हेनरी विवियन डेरेजियो (यंग बंगाल आंदोलन)
	  ○ देवेन्द्र नाथ टैगोर
	  ○ केशव चंद्र सेन
	  ○ ईश्वरचंद्र विद्यासागर
	  ○ ज्योतिबा फुले
	  ○ सावित्रीबाई फुले
	  ○ पंडिता रमाबाई
	  ○ दादाभाई नरोजी
	  ○ गोपालहरि देशमुख 'लोकहितवादी'
	  ○ रामकृष्ण परमहंस
	  ○ स्वामी विवेकानंद एवं रामकृष्ण मिशन
	  ○ आर्यसमाज एवं दयानंद सरस्वती
	  ○ श्री नारायण गुरु
	  ○ गोपाल गणेश आगरकर
	  ○ बालशास्त्री जम्भेकर
	  ○ एम जी रानाडे
	  ○ कंदुकुरी वीरेशलिंगम
	  ○ बहरामजी मालाबारी
	  ○ सैयद अहमद खाँ
	• हिंदू सुधार आंदोलन
	  ○ ब्रह्मसमाज
	  ○ आदि ब्रह्मसमाज
	  ○ प्रार्थना समाज
	  ○ धर्मसभा
	  ○ आर्यसमाज
	  ○ परमहंस मंडली
	  ○ यंग बंगाल आंदोलन
	  ○ सत्यशोधक समाज
	  ○ द सर्वेंट आफ इंडिया सोसायटी
		63

	- सोशल सर्विस लीग - सेवा सदन - देवसमाज - भारत धर्म महामंडल (1887) - आत्मसम्मान आन्दोलन (1926 ई.) - वायकोम सत्याग्रह (1924 ई.) - मंदिर प्रवेश आंदोलन - इंडियन सोशल कांफ्रेंस - नायर आंदोलन - मद्रास हिंदू एसोसिएशन (1904) - श्री नारायण धर्म परिपालन आंदोलन (एसएनडीपी) - अरविप्पुरम आंदोलन (1888) - मुस्लिम सुधार आन्दोलन - देवबंद स्कूल/ आंदोलन - अहमदिया आंदोलन - सैयद अहमद खाँ एवं अलीगढ़ आंदोलन - वहाबी आंदोलन - टीटू मीर का आंदोलन - फराजी आंदोलन - अंजुमन ए हिमायत ए इस्लामी - अहल ए हदीस - पारसी सुधार आंदोलन - रहनुमाई मजदयासन सभा (1851) - सिख सुधार आंदोलन - निरंकारी आंदोलन - सिंह सभा (1873) - अकाली आंदोलन (1921) - थियोसोफिकल मूवमेंट - सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों के प्रभाव - सकारात्मक प्रभाव - नकारात्मक पहलु	
9.	**ब्रिटिश शासन के तहत अर्थव्यवस्था** - ब्रिटिश भू राजस्व नीतियाँ - स्थायी बंदोबस्त (जमींदारी प्रथा/अनुपस्थित जमींदारी प्रथा) - रैयतवाडी बंदोबस्त - महालवाडी व्यवस्था - तालुकदारी प्रणाली - मालगुजारी प्रणाली - भारतीय कृषि पर राजस्व प्रणाली का प्रभाव - व्यापार एवं वाणिज्य - धन की निकासी सिद्धांत - धन की निकासी के विभिन्न घटक	**81**

	○ धन की निकासी के परिणाम • ब्रिटिश शासन के दौरान आर्थिक विकास ○ उद्योग ○ परिवहन ○ भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज पर सकारात्मक प्रभाव ○ भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज पर नकारात्मक प्रभाव ○ संचार • भारत में डाक प्रणाली ○ डाक प्रणाली का विकास ○ भारत में टेलीग्राफ	
10	**शिक्षा और प्रेस का विकास** • 1857 से पहले की शिक्षा ○ 1813 का चार्टर अधिनियम ○ आंग्लवादी और प्राच्यविद् ○ लॉर्ड मैकाले का 1835 का मिनट ○ वुड्स डिस्पैच ऑन एजुकेशन (1854) • 1857 के बाद की शिक्षा ○ हंटर कमीशन (1882 83) ○ भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 या रैले आयोग ○ सैडलर विश्वविद्यालय आयोग (1917-19) ○ हार्टोग समिति (1929) ○ बेसिक शिक्षा की वर्धा योजना (1937) ○ शिक्षा की सार्जेंट योजना (1944) • स्थानीय शिक्षा का विकास • तकनीकी शिक्षा का विकास • शिक्षा में यूरोपीय लोगों का योगदान • शिक्षा में स्वदेशी प्रयास • शिक्षा पर ब्रिटिश नीति का मूल्यांकन ○ शिक्षा को बढ़ावा देने के कारण ○ आधुनिक शिक्षा का नकारात्मक प्रभाव ○ आधुनिक शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव • प्रेस का विकास ○ प्रेस की सेंसरशिप अधिनियम, 1799 ○ 1823 के लाइसेंस विनियम ○ 1857 का लाइसेंसिंग अधिनियम ○ 1867 का पंजीकरण अधिनियम ○ 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट ○ समाचार पत्र (अपराधों के लिए उकसाना) अधिनियम, 1908 ○ भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियां) अधिनियम, 1931 ○ भारतीय राज्य (संरक्षण) अधिनियम, 1934 • राष्ट्रवादी और साहित्यिक विकास ○ भारतीय प्रेस का योगदान	**93**

11.	**ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोकप्रिय आंदोलन** • लोगों के प्रतिरोध के लिए जिम्मेदार कारक • नागरिक विद्रोह • राजनीतिक धार्मिक आंदोलन ○ संन्यासी विद्रोह (1770-1820) ○ फकीर विद्रोह (बंगाल, 1776-77) ○ पागल पंथी (1813-1833) ○ नरकेलबेरिया विद्रोह (1831) ○ वहाबी आंदोलन (1830-1850) ○ मोपला या मालाबारी विद्रोह (1835-1921) ○ कूका आंदोलन (1854-72) ○ फ़राज़ी विद्रोह (1838-57) • सामंती विद्रोह ○ पोलीगार विद्रोह (1795-1805) ○ वेल्लोर विद्रोह (1806) ○ वेलु थम्पी (त्रावणकोर, 1808-09) ○ पाइका विद्रोह (1817) ○ रामोसी विद्रोह (1822-26) ○ कित्तूर विद्रोह (1824-32) ○ सावंतवाड़ी विद्रोह (1844) ○ गडकरी विद्रोह (1844) • अन्य नागरिक विद्रोह • आदिवासी विद्रोह ○ प्रमुख जनजातीय विद्रोह • किसान आंदोलन ○ नील विद्रोह (1859-60) ○ पाबना विद्रोह(1870-1880) ○ दक्कन दंगे (1874-75) ○ किसान सभा आंदोलन (1920) ○ एका आंदोलन या एकता आंदोलन (1921) ○ मोपला विद्रोह (1921) ○ बारडोली सत्याग्रह (1928) ○ अखिल भारतीय किसान सभा कांग्रेस ○ बकाश्त आंदोलन (1938-47) ○ तेभागा आंदोलन (1946-47) ○ तेलंगाना आंदोलन (1946-48) • प्रांतों में किसान गतिविधि ○ केरल (मालाबार)	**104**

	○ आंध्र 133 ○ बिहार 133 ○ पंजाब 134 ○ 1857 के विद्रोह में किसानों की भूमिका ○ किसान आंदोलन की समीक्षा • कारण ○ आर्थिककारण ○ प्रशासनिक कारण / नीतियाँ ○ ब्रिटिश सामाजिक सांस्कृतिक नीतियाँ	
12.	**राष्ट्रवाद का जन्म (उदारवादी चरण 1885-1905)** • देश का एकीकरण • शिक्षा और पश्चिमी विचार • प्रेस और साहित्य • स्थानीय साहित्य का विकास • भारत के अतीत की पुनर्खोज • सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन • मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का उदय • सरकार की प्रतिक्रियावादी नीतियां और नस्लीय विरोध • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले के राजनीतिक संघ ○ कांग्रेस पूर्व संगठनों के उद्देश्य • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ○ कांग्रेस के निर्माण के पीछे सिद्धांत ○ कांग्रेस के उद्देश्य ○ उदारवादी चरण (1885-1905) ○ नरमपंथियों की प्रमुख मांगें ○ नरमपंथी राष्ट्रवादियों की उपलब्धियां ○ नरमपंथियों की कमजोरियां ○ नरमपंथियों का मूल्यांकन	**120**
13	**उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग/ चरमपंथी चरण (1905-1909)** • चरमपंथियों के उदय के कारण • नरमपंथियों की विफलता • ब्रिटिश काअसली मकसद उजागर होना • बंगाल का विभाजन • विभाजन विरोधी आंदोलन ○ नरमपंथियों के अधीन (1903-1905) ○ चरमपंथियों के तहत • स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन ○ स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलनों में जन भागीदारी ○ स्वदेशी आंदोलन का पतन • नरमपंथियों और उग्रवादियों के बीच अंतर • ऑल इंडिया मुस्लिम लीग ○ उद्देश्य	**127**

	• कांग्रेस का सूरत विभाजन (1907)
	  ○ विभाजन (कारण)
	  ○ विभाजन के प्रभाव
	  ○ सरकारी दमन
	• सरकार की रणनीति
	• 1909 के मॉर्ले मिंटो सुधार / 1909 का भारतीय परिषद अधिनियम
	• उग्रवादी राष्ट्रवाद का विकास
	• क्रांतिकारी आंदोलन का पहला चरण
	  ○ क्रांतिकारी गतिविधियां
	  ○ बंगाल
	  ○ Maharashtra
	  ○ पंजाब
	• विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियां
	  ○ इंडिया हाउस (इंडिया होम रूल सोसाइटी)
	  ○ भारतीय स्वतंत्रता समिति
	  ○ भारतीय राष्ट्रीय पार्टी
	  ○ इंडियन इंडिपेंडेंस लीग
	  ○ ग़दर पार्टी
	  ○ क्रांतिकारी गतिविधि का पतन
	• प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन
	• होम रूल लीग आंदोलन
	  ○ तिलक के अधीन होमरूल लीग
	  ○ बेसेंट के तहत होम रूल लीग
	  ○ होम रूल लीग के उद्देश्य
	  ○ होम रूल लीग के कार्य
	  ○ सरकारी रवैया
	  ○ होम रूल लीग का मूल्यांकन
	• कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916)
	• लखनऊ पैक्ट कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच
	  ○ लीग और कांग्रेस के पुनर्मिलन का कारण	

14	**जन आंदोलन गांधीवादी युग (1917-1925)**
	• गांधी का प्रारंभिक जीवन
	• संघर्ष का मध्यम चरण (1894-1906)
	• निष्क्रिय प्रतिरोध या सत्याग्रह का चरण (1906-1914)
	  ○ भारतीय प्रवास पर प्रतिबंध के खिलाफ अभियान (1908)
	  ○ पोल टैक्स (1913) और भारतीय विवाहों के अमान्यकरण के खिलाफ अभियान
	  ○ ट्रांसवाल इमिग्रेशन एक्ट का विरोध
	  ○ आंदोलन के परिणाम और शिक्षा
	  ○ महात्मा गांधी की सत्याग्रह की तकनीक
	• महात्मा गांधी का भारत आगमन
	  ○ चंपारण सत्याग्रह (1917)
	  ○ अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918)
		143

	○ खेड़ा सत्याग्रह (1918) • मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार और भारत सरकार अधिनियम, • रॉलेट एक्ट (1919) • जलियांवाला बाग नरसंहार (13 अप्रैल, 1919) • खिलाफत आंदोलन • असहयोग खिलाफत आंदोलन ○ आंदोलन का प्रसार ○ आंदोलन पर लोगों की प्रतिक्रिया ○ सरकार की प्रतिक्रिया ○ चौरी चौरा की घटना ○ गांधीजी ने असहयोग आंदोलन क्यों वापस ले लिया? ○ खिलाफत असहयोग आंदोलन का मूल्यांकन	
15.	**स्वराज के लिए संघर्ष (1925 1939)** • कांग्रेस खिलाफत स्वराज्य पार्टी या स्वराज पार्टी ○ गांधी का रवैया ○ स्वराज पार्टी की उपलब्धियां ○ पार्टी की कमियां ○ स्वराजवादियों का मूल्यांकन ○ अपरिवर्तन वादियों द्वारा रचनात्मक कार्य ○ रचनात्मक कार्य की आलोचना • मार्क्सवादी और समाजवादी विचारों का प्रसार • 1920 के दशक के दौरान क्रांतिकारी गतिविधि का पुनरुत्थान • क्रांतिकारी गतिविधियां ○ सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में बम ○ चटगांव शस्त्रागार विद्रोह (अप्रैल 1930) ○ क्रांतिकारी आंदोलन के नए चरण का विश्लेषण ○ आधिकारिक प्रतिक्रिया • साइमन कमीशन/भारतीय सांविधिक आयोग (1927) ○ आयोग पर भारतीय प्रतिक्रिया ○ साइमन कमीशन की सिफारिशें • मुस्लिम लीग के दिल्ली प्रस्ताव (1927) • नेहरू रिपोर्ट (1928) • जिन्ना के चौदह सूत्र • कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन (1928) • इरविन की घोषणा (31 अक्टूबर, 1929) • दिल्ली घोषणापत्र (नवंबर 1929) • कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929) • सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) ○ दांडी मार्च (12 मार्च 6 अप्रैल, 1930) ○ नमक कानून की अवज्ञा का प्रसार ○ विभिन्न स्थानों पर सत्याग्रह ○ आंदोलन का प्रभाव	**154**

	○ सविनय अवज्ञा आंदोलन की विशेषताएं ○ गांधी इरविन समझौता (1931) ○ सविनय अवज्ञा आंदोलन का मूल्यांकन • कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931) • गोलमेज सम्मेलन ○ प्रथम गोलमेज सम्मेलन 182 ○ दूसरा गोलमेज सम्मेलन 182 ○ तीसरा गोलमेज सम्मेलन 183 • सविनय अवज्ञा आंदोलन को फिर से शुरू करना • सांप्रदायिक पुरस्कार और पूना पैक्ट ○ सांप्रदायिक पुरस्कार के मुख्य प्रावधान ○ गांधी की प्रतिक्रिया ○ पूना पैक्ट ○ हरिजनों के लिए और अस्पृश्यता के खिलाफ गांधी का अभियान • गांधीजी और अम्बेडकर वैचारिक समानताएं और मतभेद • भारत सरकार अधिनियम, 1935 ○ 1937 के प्रांतीय चुनाव 186 • कांग्रेस के हरिपुरा और त्रिपुरी अधिवेशन • द्वितीय विश्व युद्ध (1939) • वर्धा में सीडब्ल्यूसी (कांग्रेस वर्किंग कमिटी) की बैठक (10 14 सितंबर, 1939) • कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन (मार्च 1940) • सुभाष चंद्र बोस • गांधी और बोस वैचारिक मतभेद	
16.	**स्वतंत्रता की ओर (1940 1947)** • मुस्लिम लीग का लाहौर प्रस्ताव (1940) • अगस्त प्रस्ताव (1940) ○ अगस्त ऑफर पर प्रतिक्रिया ○ अगस्त ऑफर का मूल्यांकन • व्यक्तिगत सत्याग्रह (1941) • गांधीजी ने नेहरू को अपना उत्तराधिकारी नामित किया • द क्रिप्स मिशन (1942) ○ मुख्य प्रस्ताव ○ मिशन का परिणाम • भारत छोड़ो आंदोलन (1942) ○ 'भारत छोड़ो' का संकल्प ○ चरण ○ आंदोलन का प्रसार ○ भूमिगत गतिविधि ○ समानांतर सरकारें ○ सामूहिक भागीदारी का विस्तार ○ सरकारी दमन ○ आंदोलन की सफलता	**175**

<table>
<tr>
<td></td>
<td>

आंदोलन की कमियां
गांधी के अनशन
1943 का बंगाल अकाल
राजगोपालाचारी फॉर्मूला (1944)
सीआर फ़ॉर्मूला में मुख्य बिंदु
फॉर्मूले पर आपत्ति
देसाई लियाकत समझौता (1945)
वेवेल योजना (1945)
सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA)
भारतीय राष्ट्रीय सेना का उदय
लाल किले में आईएनए पर मुकदमा (नवंबर 1945)
आम चुनाव (1945 46)
1945 46 की सर्दियों में विद्रोह की तीन घटनाये
नौसेना द्वारा विद्रोह
कैबिनेट मिशन (1946)
प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस और सांप्रदायिक दंगे
संविधान सभा का चुनाव (1946)
अंतरिम सरकार
लीग का अवरोधक दृष्टिकोण
भारत में साम्प्रदायिकता
चरण 204
भारत में सांप्रदायिकता के विकास के कारण
संविधान सभा का गठन (1946)
क्लेमेंट एटली की घोषणा
माउंटबेटन योजना (3 जून 1947)
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम

</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारत

सीमा आयोग
संसाधनों का विभाजन
रियासतों का एकीकरण
इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन
अधिग्रहण प्रक्रिया
हैदराबाद
जूनागढ़
कश्मीर
कांग्रेस ने विभाजन को क्यों स्वीकार किया?

</td>
<td>192</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>महत्वपूर्ण व्यक्ति और घटनाएँ

गवर्नर जनरल
वारेन हेस्टिंग्स (1773 1785)
लॉर्ड कार्नवालिस (1786 1793)
सर जॉन शोर (1793 1798)
लॉर्ड वेलेस्ली (1798 1805)

</td>
<td>196</td>
</tr>
</table>

	- सर जॉर्ज बार्लो (1805 1807) - लॉर्ड मिंटो प्रथम (1807 1813) - लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813 1823) - लॉर्ड एमहर्स्ट (1823 1828) - लॉर्ड विलियम बेंटिक (1828 1835) - लॉर्ड चार्ल्स मेटकाफ (1835 36) - लॉर्ड ऑकलैंड (1836 42) - लॉर्ड एलेनबरो (1842 1844) - लॉर्ड हार्डिंग प्रथम (1844 1848) - लॉर्ड डलहौजी (1848 1856) - लॉर्ड कैनिंग (1856 1857) वायसराय - लॉर्ड कैनिंग (1857-1862) - लॉर्ड मेयो (1869-1872) - लॉर्ड लिटन (1876-1880) - लॉर्ड रिपन (1880-1884) - लॉर्ड डफरिन (1884-1888) - लॉर्ड लैंसडाउन (1888-1894) - लॉर्ड कर्जन (1899-1905) - लॉर्ड मिंटो II (1905-1910) - लॉर्ड हार्डिंग II (1910-1916) - लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916-1921) - लॉर्ड रीडिंग (1921-1926) - लॉर्ड इरविन (1926-1931) - लॉर्ड विलिंगडन (1931-1936) - लॉर्ड लिनलिथगो (1936-1944) - लॉर्ड वेवेल (1944-1947) - लॉर्ड माउंटबेटन (1947-1948) - सी राजगोपालाचारी (1948-1950) कांग्रेस के कुछ महत्वपूर्ण सत्र क्रांतिकारी संगठन/पार्टियाँ क्रांतिकारी घटनाएँ/मामले		

1 CHAPTER भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

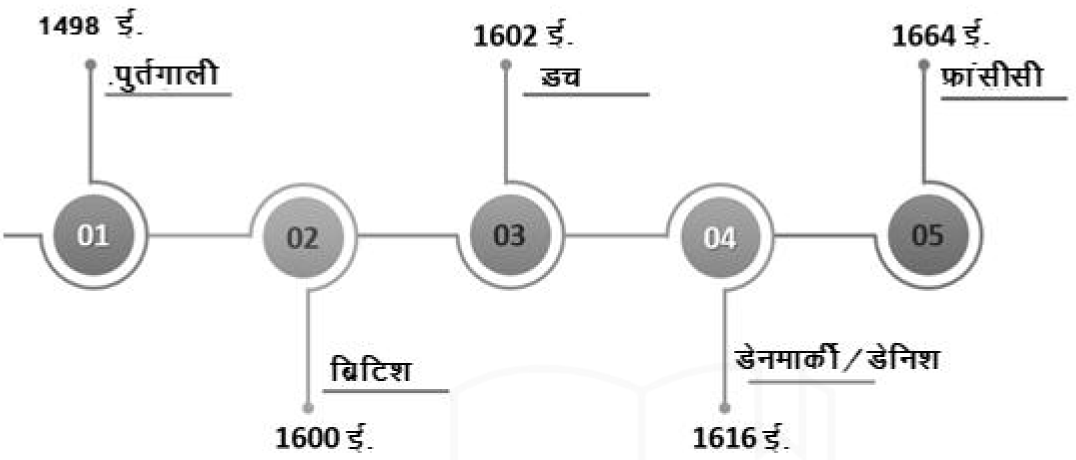

यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक

- **उष्ण कटिबन्धीय वस्तुओं** जैसे-मसाले,रेशम, कीमती पत्थर, चीनी मिट्टी के बरतन आदि की **यूरोप में भारी माँग**
- 1453 ई. में **कुस्तुनतुनिया (तुर्की)पर उस्मानिया तुर्कों का कब्जा** जिससे यूरोपियों का एशियाई व्यापार बाधित हुआ तथा नये व्यापार मार्गों की आवश्यकता उत्पन्न हुई
- **पुनर्जागरण एवं वैज्ञानिक क्रान्ति** के फलस्वरूप यूरोप में समुद्री कम्पास, जहाज की चाल मापने वाला उपकरण, एस्ट्रोलैब (अक्षांश -देशान्तरमापक), त्रिकोणपाल, तोपों एवं बन्दूकों काआविष्कार हुआ। इससे समुद्री यात्राएँ काफी सुरक्षित हो गयी।
- **भारत की अपार संपदा:** मार्को पोलो और कुछ अन्य स्रोतों से यूरोपीय लोगों को भारत की अपार संपत्ति के बारे में पता चला।
- **युरोप में तीव्र औद्योगीकरण** तथा बाजार के विस्तार की खोज आकांक्षा
- तत्कालीन भारत में **कमज़ोर मुग़ल सत्ता** तथा नवीन क्षेत्रीय राज्यों का उदय

भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग के खोज के कारण-

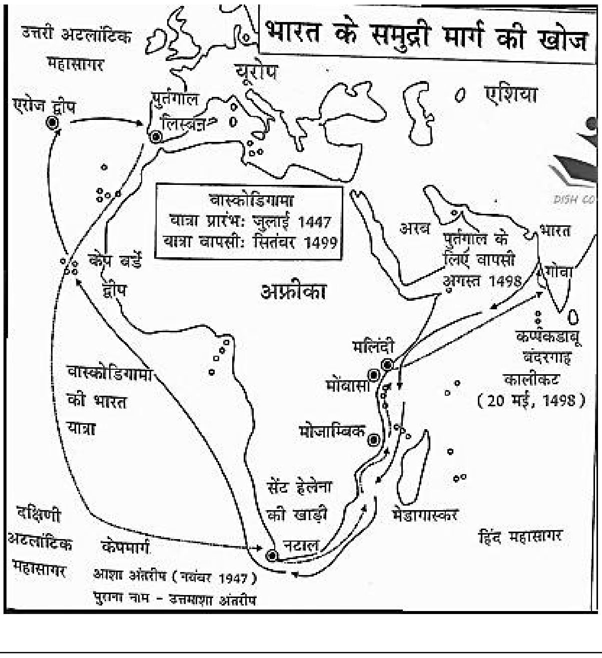

- जहाजरानी निर्माण एवं नौ परिवहन में प्रगति
- भारत में व्यापार करके अधिक धन कमाने की लालसा
- यूरोप एवं एशिया के व्यापार पर वेनिस एवं जेनेवा के व्यापारियों का अधिकार
- एशिया का अधिकांश व्यापार अरबवासियों तथा यूरोपीय व्यापार इटली वालों के हाथो में था इस व्यापार चक्र को तोड़ने के लिए नए व्यापारिक क्षेत्रों की आवश्यकता थी
- **यूरोपीय शासकों** जैसे स्पेन की महारानी ईशाबेला तथा पुर्तगाल के राजकुमार प्रिंस हेनरी आदि द्वारा **समुद्री खोजो को प्रोत्साहन**।
- **साहसी नाविकों का योगदान**: बार्थोलोमियो डियास (पुर्तगाली नाविक) ने 1487 ई. में उत्तम आशा अन्तरीप **'Cape of Good Hope'** की खोज की। 1492 ई. में स्पेनवासी कोलम्बस अमेरिका तथा 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक **वास्कोडिगामा** भारत पंहुचा।

पुर्तगालियों का प्रारम्भिक अभियान

वास्कोडिगामा	• कैप ऑफ़ द गुड होप होते हुए एक गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मुनीक की सहायता से कालीकट बंदरगाह पर कप्पकडाबू नामक स्थान पर 17 मई 1498 को पंहुचा। • कालीकट के राजा जमोरिन से व्यापर करने की अनुमति प्राप्त की • कन्नूर में, उन्होंने एक व्यापारिक कारखाना स्थापित किया
पेड्रो अल्वारेज़ कैबरेल	• 1500 में कालीकट में भारत में पहला यूरोपीय कारखाना स्थापित किया • पुर्तगालियों पर अरब हमले का सफलतापूर्वक जवाब दिया • कालीकट पर बमबारी की और कोचीन और कन्नूर के शासकों के साथ लाभकारी संधियाँ कीं
फ्रांसिस्को डी अल्मीडा (1505-1509)	• यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था । • 1505 में, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा ने भारत में पुर्तगालियों की स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया। • उसने अंजदिवा, कोचीन, कन्नानोर और किलवा में किले बनवाए। . • इसने ब्लू वाटर पॉलिसी तथा कार्टेज प्रणाली जारी की

अल्फांसो डी अल्बुर्कक (1509-1515)	• भारत में पुर्तगालियों का वास्तविक संस्थापक
	• 1510 ई. में बीजापुर के शासक युसुफ आदिल शाह से गोवा छीना
	• पुर्तगालियों को भारत में बसने तथा भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रेरित किया ।
	• पहला गवर्नर था जिसने अपने क्षेत्राधिकार में सती प्रथा पर रोक लगाई ।
	• पुर्तगाली सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की
	• विजयनगर के शासक कृष्णदेवराय से इसके अच्छे सम्बन्ध थे ।
	• अधिकार का क्रम
	    ○ गोवा 1510
	    ○ मलक्का 1511
	    ○ हारमुज 1515
	• इसने गोवा को राजनितिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभारा

नीनो-डी-कुन्हा	• गोवा को राजधानी बनाया

	• अंग्रेजो के मुकाबले नौसैनिक क्षमता में पिछड जाना । • धार्मिक असहिष्णुता की नीति अपनाना • भारतीय स्त्रियों से विवाह एवं धर्मान्तरण • व्यापारिक प्रशासन में अकुशलता • रिश्वतखोरी एवं प्रशासनिक नियुक्तियों में भ्रष्टाचार • डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती
नोट 1503 ई. में कोचीन (कोल्लकी स्थापना की जिसे **एस्तादो दा इण्डिया** कहा गया । कम्पनी का सर्वोच्च अधिकारी एक गवर्नर होता था। इसे कम्पनी के हित में व्यापार, संधि, युद्ध विस्तार के अधिकार दिये गये ।	

ब्लू वाटर पॉलिसी -
- हिन्द महासागर क्षेत्र में पुर्तगालियों का वर्चस्व स्थापित करने के लिए अल्मीडा की सामुद्रिक नीति को ब्लू वाटर पॉलिसी के नाम से जाना जाता है

कार्टेज़ प्रणाली-
- 16वीं शताब्दी में हिंद महासागर में पुर्तगालियों द्वारा जारी नौसैनिक व्यापार लाइसेंस।
- इसी प्रकार की ब्रिटिश व्यवस्था = 20वीं सदी में नौसैनिक प्रणाली।

भारत में पुर्तगाली विस्तार

- मुंबई से दमन और दीव और फिर गुजरात तक गोवा के तट के आसपास के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया
- सैन थोम (चेन्नई में) और नागपट्टिनम (आंध्र में) में पूर्वी तट पर सैन्य चौकियों और बस्तियों की स्थापना की।
- 1579 के लगभग शाही फरमान ने उन्हें व्यापारिक गतिविधियों के लिए बंगाल में सतगाँव के पास बसा।

पुर्तगालियों का महत्व

सैन्य:
- बंदूकों के उपयोग में सैन्य शक्ति का विकास हुआ
- फील्ड गन के मुगल उपयोग और 'रकाब के तोपखाने' में योगदान दिया।
- स्पेनिश मॉडल पर पैदल सेना के ड्रिलिंग समूहों की प्रणाली का विकास किया ।

नौसेना तकनीक
- मल्टी-डेक वाले भारी जहाजों का निर्माण किया गया था इससे उन्हें भारी हथियार ले जाने की सुविधा मिली।
- शाही शस्त्रागार और डॉकयार्ड का निर्माण

सांस्कृतिक कार्य
- सिल्वरस्मिथ और सुनार की कला गोवा में फली-फूली, फिलाग्री वर्कऔर धातु के काम में गहनों का केंद्र बन गया।
- पुर्तगालियों द्वारा चर्चों के आंतरिक भाग में लकड़ी का काम, मूर्तिकला और चित्रित छतें निर्मित की गयी।

डच

डच कम्पनी का ढ़ांचा एवं भारत आगमन
- **कॉर्नेलिस हाउटमेन-** 1596 में भारत आने वाला पहला डच व्यक्ति
- 1602 ई. में भारत से व्यापार करने के लिए हॉलैण्ड की संसद द्वारा एक कम्पनी का गठन - "यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड" मूल नाम - VOC (vereenigde Oost Indische Compagnie) वेरिंग्देओस्त इंडिस

- डच कम्पनी एक अर्धसरकारी कम्पनी थी जो एक निदेशक मंडल द्वारा चलाई जाती थी । इसमें कुल 17 व्यक्ति शामिल थे जिन्हें **Gentlemen** 17 कहा जाता था ।
- **कम्पनी के दो मुख्यालय थे** - एम्सटर्डम (नीदरलैंण्ड), बटाविया (इण्डोनेशिया)
- भारत में डचों की पहली फैक्ट्री 1605 ई. में मसूलीपत्तनम (आंध्र प्रदेश) में स्थापित हुई ।
- बंगाल में डचों ने प्रथम फैक्ट्री की स्थापना पीपली में की
- डचों ने भारत में मुख्यतः पूर्वी तट पर अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की जो निम्न हैं-

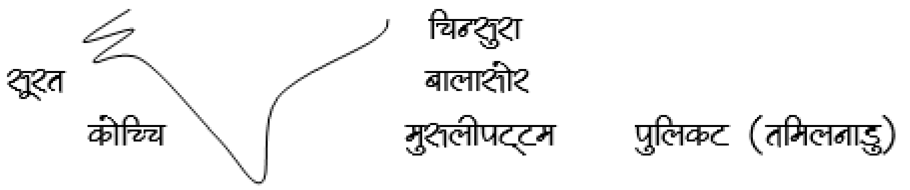

डचों द्वारा स्थापित कारखाने
- प्रथम - मसूलीपत्तनम
- द्वितीय - पत्तोपोली (निज़ामपट्नम)
- तृतीय- पुलीकट 1610
- अन्य कारखाने – सूरत (1616), विमलीपत्तनम, कराईकल (1645), चिनसुरा (1653), कोचीन (1663), कासिम बाजार ,बालासोर ,नागापत्तनम (1658)

मुख्यालय
- पुलीकट को डचों ने व्यापारिक केंद्र एवं मुख्यालय बनाया
- 1690 में पुलीकट के स्थान पर नागपट्टनम को मुख्यालय बनाया

प्रमुख किला या फोर्ट
- चिनसुरा में गुस्तावुस फोर्ट की स्थापना 1653 ईसवी में हुई
- कोच्चि में फोर्ट विलियम की स्थापना 1663 ईसवी में हुई

नोट
- डचों ने मलक्का या मसाला द्वीप जिसे इंडोनेशिया कहा जाता है इसको पुर्तगालियों से जीता एवं श्रीलंका को भी जीता
- डचों ने जकार्ता को जीतकर नए नगर बटाविया की स्थापना की
- मुग़ल बादशाह औरंगजेब ने 3.5 प्रतिशत वार्षिक चुंगी पर बंगाल ,बिहार और ओडिसा में व्यापार का एकाधिकार डचों को प्रदान किया
- डचों की व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता या कार्टल पर आधारित थी
- डच मूल रूप से काली मिर्च एवं अन्य मसालों के व्यापार में ही रूचि रखते थे ये मसाले मूलतः इंडोनेशिया में अधिक मिलते थे इसलिए वह डच कम्पनी का प्रमुख केंद्र बन गया
- डचों ने भारत में मसालों के स्थान पर भारतीय कपड़ो के व्यापार को अधिक महत्व दिया
- भारत में डचों के आने से सूती वस्त्र उद्योग का विकास हुआ एवं भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है

भारत में डचों के अधीन व्यापार
- **नील उत्पादक प्रमुख क्षेत्र :** यमुना घाटी और मध्य भारत,
- **कपड़ा और रेशम**: बंगाल, गुजरात और कोरोमंडल,
- **साल्टपीटर:** बिहार
- **अफीम और चावल**: गंगा घाटी।
- काली मिर्च और मसालों का एकाधिकार व्यापार।

आयात-निर्यात

- डच सोना-चाँदी, पारा, ऊन तथा काँच की वस्तुएँ भारत से ले जाते थे ।
- वे भारत से सूती एवं रेशमी वस्त्र, धागा, नील, अफीम, मसाले, चीनी, धातु की बनी वस्तुएँ, शोरा आदि निर्यात करते थे ।

डचों के पतन कारण

- अंग्रेजो से प्रतिद्वंदिता
- डच कंपनी का नियंत्रण सीधे डच सरकार के हाथ में था इसलिए कंपनी अपनी इच्छा अनुसार विस्तार नहीं कर सकती थी
- अंग्रेज़ो की नौसैनिक शक्ति डचों की तुलना में अधिक मजबूत थी
- डचों की भारत से अधिक रूचि इंडोनेशिया एवं मसाला द्वीपों में थी
- कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अयोग्य प्रशासक
- 1759 ई. में बेदरा (बंगाल) के युद्ध में अंग्रेजो ने डचों को बुरी तरह पराजित किया जिससे डचों की शक्ति भारत में समाप्त हो गयी। बाद में इन्होंने अपनी अधिकांश फैक्ट्रियाँ अंग्रेजो को बेच दी ।
- कोलाचेल की लड़ाई (1741) डच और त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा की लड़ाई ने मालाबार क्षेत्र में डच सत्ता का पूर्ण सफाया कर दिया।

महत्व

- **भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है**

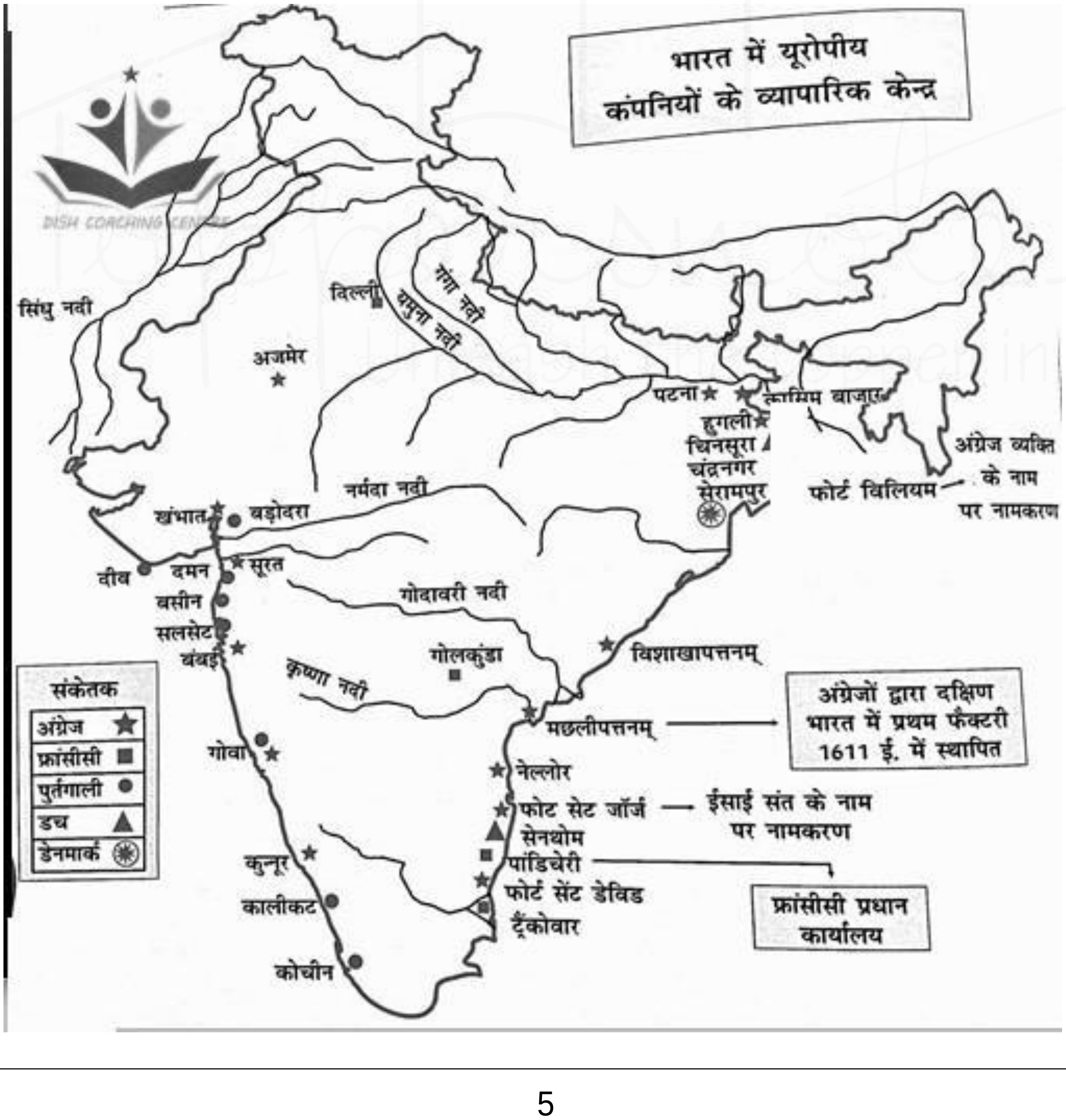

ईस्ट इण्डिया कंपनी का गठन एवं ढाँचा:

- 1599 ईसवी में जॉन मिलडेन हॉल ब्रिटिश यात्री थल मार्ग से भारत आया
- 1599 में इंग्लैंड में मर्चेंट एडवेंचर नामक एक व्यापारिक दल ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अथवा दी गवर्नर एंड कंपनी ऑफ़ मर्चेंट ऑफ़ ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज की स्थापना की जो बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी कहलाई ।
- 31 दिसम्बर1600 को महारानी एलिजाबेथ -1 प्रथम ने एक रॉयल चार्टर जारी कर इस कंपनी को 15 वर्षो के लिए पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने का एकाधिकार पत्र प्रदान किया और आगे जाकर 1609 में ब्रिटिश सम्राट जेम्स-प्रथम ने कंपनी को अनिश्चित काल के लिए व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया
- कंपनी का प्रारंभिक उद्देश्य भू-भाग नहीं बल्कि व्याkiपार करना था
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की प्रथम समुद्री यात्रा 1601 में जावा ,सुमात्रा एवं मलक्का के लिए हुई

ढ़ाँचा

- एक निजी कम्पनी
- 24 सदस्यीय बार्ड ऑफ डायरेक्टर्स द्वारा संचालित जिसका सर्वोच्च अधिकारी गवर्नर था ।
- गवर्नर को युद्ध, संधि, विस्तार आदि करने का अधिकार।

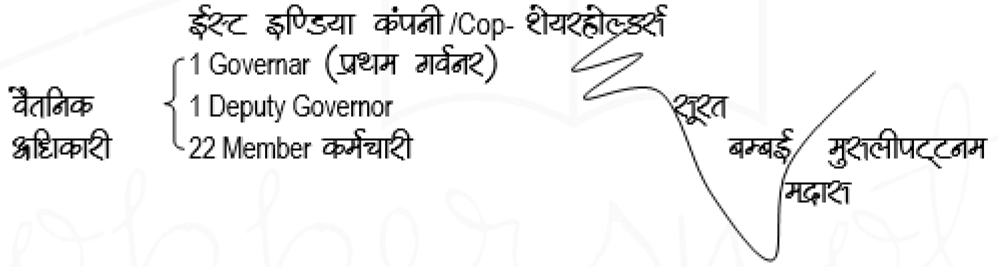

भारत में विस्तार/ फैक्ट्रियो की स्थापना

1609	• **हैक्टर** नामक पहला अंग्रेजी जहाज हॉकिन्स के नेतृत्व में भारत आया • कैप्टन हॉकिन्स **सूरत** में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहाँगीर के दरबार में पहुंचे, लेकिन सफल नहीं हुए • पुर्तगालियों के विरोध का सामना करना पड़ा
1611	• मसूलीपट्टनम में व्यापार शुरू किया और बाद में 1616 में एक कारखाना स्थापित किया।
1612	• कैप्टन थॉमस बेस्ट ने सूरत के पास समुद्र में पुर्तगालियों को हराया; • 1613 में थॉमस एल्डवर्थ के तहत सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहांगीर से अनुमति प्राप्त हुई।
1615	• जेम्स प्रथम के एक मान्यता प्राप्त राजदूत सर थॉमस रो, जहांगीर के दरबार में आए, फरवरी 1619 तक वहां रहे।
1632	• गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा जारी 'गोल्डन फरमान' प्राप्त किया
1662	• जब चार्ल्स ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से शादी की, तो पुर्तगाल के राजा द्वारा बॉम्बे को राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में उपहार में दिया गया था
1687	• पश्चिमी प्रेसीडेंसी की सीट सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित कर दी गई

दक्षिण भारत

- **दक्षिण भारत की प्रथम व्यापारिक कोठी** - 1611 में **मछली पट्टनम**। इसके बाद मद्रास में व्यापारिक कोठी की स्थापना की

पूर्वी भारत

- **पूर्वी भारत का प्रथम कारखाना - 1633 में उड़ीसा के बालासोर में**
- अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर अनेक फैक्ट्रियों की स्थापना की जो निम्न हैं –
  - हरिहरपुर (बंगाल), बालासोर (उडीसा), पटना, हुगल, कासिम बाजार (बंगाल)

मद्रास

- **फ्रांसिस डे ने 1639 में चंद्रगिरी के राजा** से मद्रास को पट्टे पर लिया जहां बाद में **फोर्ट सेंट जॉर्ज** कोठी का निर्माण किया गया

गोलकुंडा

- **गोलकुंडा के सुल्तान** के द्वारा 1632 में **"सुनहरा फरमान"** के माध्यम से गोलकुंडा राज्य में स्वतंत्रता पूर्वक व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गयी
- ईस्ट इण्डिया कंपनी की प्रथम फैक्ट्री (भारत में प्रथम) गोलकुण्डा राज्य (मुसलीपट्टनम) में स्थापित हुई ।

मुंबई

- **1661** में ब्रिटेन के **राजा चार्ल्स द्वितीय** ने पुर्तगाली राजकुमारी से विवाह किया जिसमे दहेज़ के रूप में ब्रिटेन के राजा को मुंबई टापू मिल गया। चार्ल्स ने इसे 10 पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया
- 1669 और 1677 के बीच कंपनी के **गवर्नर जेराल्ड आंगियर ने आधुनिक मुंबई नगर की स्थापना की** और बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने ब्रिटिश सरकार से बम्बई को प्राप्त किया

मुग़ल तथा अंग्रेज

- 1691 में औरंगजेब ने एक निश्चित राशि के बदले कंपनी को बंगाल में चुंगी रहित व्यापार की अनुमति दी।
- **शाही फरमान- मुग़ल सम्राट फर्रुखशियर** की बीमारी का इलाज कंपनी के एक डॉक्टर **विलियम हैमिल्टन** के द्वारा सफलता पूर्वक किया गया जिससे बादशाह ने खुश होकर एक **फरमान** जारी कर दिया जिसमे एक निश्चित **वार्षिक कर 3000 रुपये** चुकाकर निशुल्क व्यापर करने एवं मुंबई में कंपनी ढाले गए सिक्के को संपूर्ण मुग़ल राज्य में चलाने की आज्ञा मिल गयी। अब उन्हें वही कर देने पड़ेगे जो भारतीयों को देने पड़ते है**।**
- ब्रिटिश इतिहासकार और्म्स ने इसको **कंपनी का अधिकार पत्र या मैग्नाकार्टा** कहा**।**
- बंगाल के नबाव मुर्शीद कुली खां ने फर्रुखशियर द्वारा दिए गए फरमान के बंगाल में स्वतंत्र प्रयोग को नियंत्रित करने का प्रयास किया
- मराठा सेना नायक **कान्होजी आगरिया** ने पश्चमी तट पर अंग्रेज़ो की स्थिति को काफी कमजोर बना दिया।

बंगाल में विस्तार

- बंगाल में कारखाने**: हुगली (1651), कासिमबाजार, पटना** और **राजमहल।**
- **सुतानती,कालिकाता और गोविंदपुर** तीनो गांव को मिलाकर **जॉब चार्नोक** ने कलकत्ता शहर की नीव रखी और कंपनी ने यही पर **फोर्ट विलियम किले** की स्थापना की और **चार्ल्स आयर को प्रथम प्रेसीडेंट** नियुक्त किया गया ।
- कलकत्ता को अंग्रेज़ो ने 1700 में पहला प्रेसीडेंट नगर घोषित किया। 1774 से 1911 तक कलकत्ता ब्रिटिश भारत की राजधानी बना रहा
- **विलियम हैजेज** बंगाल का प्रथम अंग्रेज गवर्नर था।

फ्रांसीसीयों का आगमन

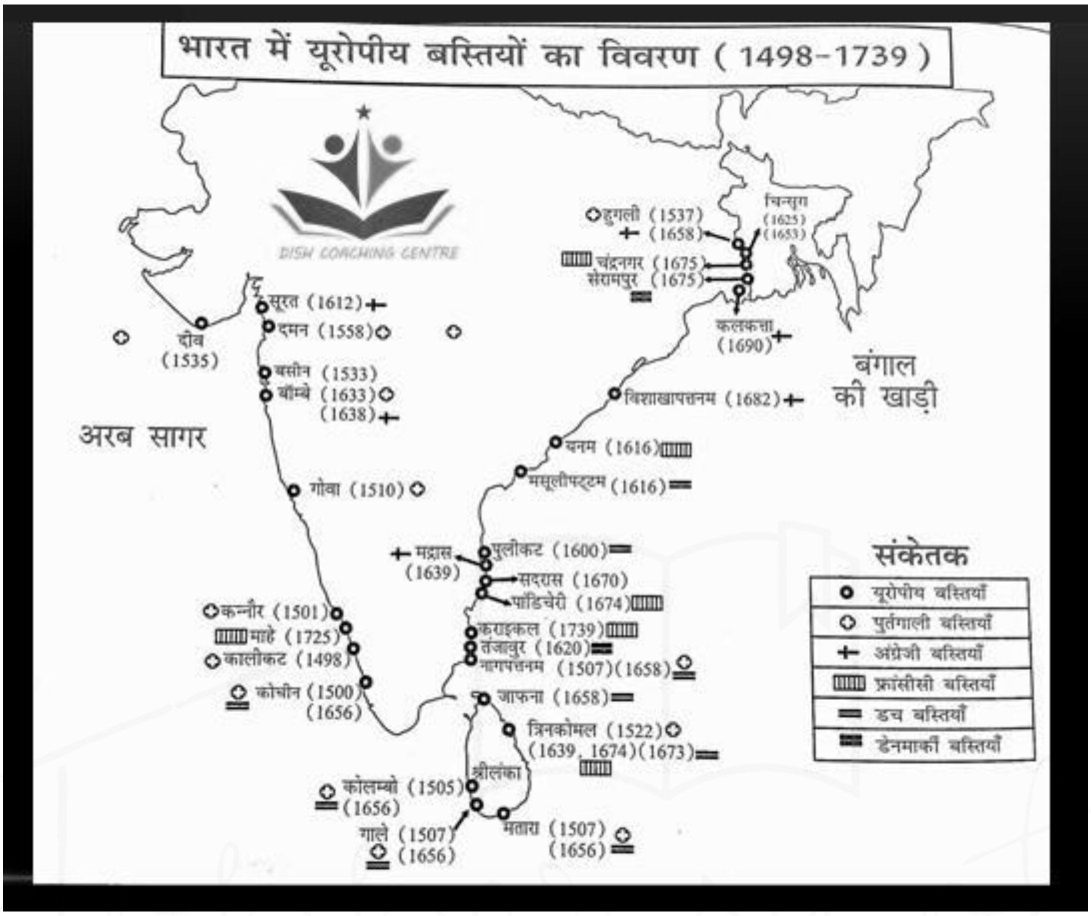

फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी

- भारत में आने वाली अंतिम यूरोपीय शक्ति
- फ्रांस के सम्राट **लुई 14वे** के मंत्री कॉल्बर्ट ने **1664** में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की थी। जिसे **'The compaginie des Indes Orientales'** कहा गया।
- इसे सरकारी व्यापारिक कंपनी भी कहा जाता था क्योकि यह कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी तथा सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर करती थी
- प्रथम फ्रांसिसी फैक्ट्री **- सूरत में 1668** में **फ्रांसिस केरॉन** द्वारा
- **1669** में **मसूलीपट्टनम** में दूसरी फ्रैंच फैक्ट्री की स्थापना की
- **'पांडिचेरी' की नींव** -1673 में कंपनी के निदेशक **फ्रेंको मार्टिन तथा लेस्पिने** ने **वलिकोण्डपुरम के सूबेदार शेरखान लोदी** से कुछ गॉव प्राप्त कियेजिसे कालान्तर में **पांडिचेरी** कहा गया
- **1673** में बंगाल के **नबाब शाइस्ता खान** ने फ्रांसिसीयो को एक जगह किराये पर दी जहाँ **चंद्रनगर** की प्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गयी ।
- पांडिचेरी को पूर्व में फ्रांसीसी बस्तियों का **मुख्यालय** बनाया गया और मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी मामलों का महानिदेशक नियुक्त किया गया।
- 1693 में डचों ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया सितंबर 1697 में संपन्न हुई रिसविक की संधि से पांडिचेरी फ्रेंच को वापस मिला
- पांडिचेरी के कारखाने में ही **मार्टिन** ने **फोर्ट लुई** का निर्माण कराया**।**
- फ्रांसीसियों द्वारा 1721 ई. में मारीशस, 1725 ई. में माहे (मालाबार तट) एवं 1739 ई. में कराईकल पर अधिकार कर लिया गया ।

- महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र: माहे, कराईकल, बालासोर और कासिम बाजार
- 1742 ई. के पश्चात व्यापारिक लाभ कमाने के साथ साथ फ्रांसीसियों की राजनीतिक महत्त्वकांक्षाए भी जाग्रत हो गई। परिणामस्वरुप अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध छिड़ गया। इन युद्धों को '**कर्नाटक युद्ध**' के नाम से जानते है।

ब्रिटिश फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता

- भारत में एंग्लो-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता इंग्लैंड और फ्रांस की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता, जो उत्तराधिकार के ऑस्ट्रियाई युद्ध से शुरू होकर सप्तवर्षीय युद्ध के साथ समाप्त होती है।
- 1740 में, दक्षिण भारत में राजनीतिक स्थिति अनिश्चित और भ्रमित थी। हैदराबाद के निज़ाम आसफ़जाह बूढ़े थे और पूरी तरह से पश्चिम में मराठों से लड़ने में लगे हुए थे।अत: एंग्लो फ्रेंच प्रतिद्वंद्विता की परिणीति कर्नाटक युद्धों के रूप में हुई

फ्रांसीसियों की पराजय का कारण

- फ्रांसीसी कंपनी पूर्णतः सरकारी कंपनी होने के कारण निर्णय लेने मे विलंब
- अधिकारियों मे सहयोग एवं समन्वय का अभाव
- नौसैनिक क्षमता ब्रिटिश की तुलना में कमजोर थी।
- ब्रिटिशकंपनी को उनकी अपनी सरकार का जितना समर्थन मिला वैसा फ्रांसीसी कंपनी को प्राप्त नहीं हुआ।

महत्व

- राजनीतिक हस्तक्षेप कर आर्थिक लाभ लेने की अवधारणा का सूत्रपात भारत में फ्रांसीसी अधिकारी डूप्ले ने किया जिसे आगे चलकर अंग्रेजों ने अपनाया।

डेनिश का भारत में आगमन

- **डेनमार्क** की ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना **1616** में की गई थी|
- ये भी व्यापार के उद्देश्य से यह भी भारत में आये
- पहली फैक्ट्री - त्रावणकोर (तंजोर ,तमिलनाडु) 1620 में
- दूसरी फैक्ट्री - सीरमपुर (बंगाल) 1676 में
- 1745 में अपनी सभी फैक्ट्री अंग्रेज़ो को बेच दी एवं भारत से चले गए|

कर्नाटक युद्ध

- कोरोमंडल समुद्र तट पर स्थित क्षेत्र जिसे कर्नाटक या कर्णाटक कहा जाता था। परंतु अधिकार को लेकर इन दोनों कंपनियों में लगभग बीस वर्ष तक संघर्ष हुआ।
- कोरोमंडल समुद्रतट पर स्थित किलाबंद मद्रास और पांडिचेरी क्रमशः अंग्रेजों और फ्रांसीसियों की सामरिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण बस्तियाँ थी। तत्कालीन कर्नाटक दक्कन के सूबेदार के नियंत्रण में था, जिसकी राजधानी आरकाट थी।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई.)

- **कारण** -आस्ट्रिया के उतराधिकार युद्ध का विस्तार ।
- तात्कालिक कारण - अंग्रेज कैप्टन बर्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी जहांजों पर अधिकार कर लेना। बदलें में मारीशस के फ्रांसीसी गवर्नर ला बुर्डोने के सहयोग से डूप्ले ने मद्रास के गवर्नर मोर्स को आत्म समर्पण के लिए मजबूर कर दिया।
- **नेतृत्व -** अंग्रेजों का नेतृत्व बर्नेट तथा फ्रांसीसियों का डूप्ले कर रहे थे।
- **परिणाम -** कर्नाटक के नवाब की सहायता से युद्ध में फ्रांसीसी विजयी हुए। इस युद्ध में नौसैनिक शक्ति की महत्ता स्थापित हुई।
- **संधि-** 1748 ई. में यूरोप में एक्स-ला-शापेल नामक संधि के सम्पन्न होने पर भारत में भी इन दोनों कंपनियों के बीच संघर्ष समाप्त हो गया।

सेंटथोमे का युद्ध (1748 ई.) यह युद्ध अडयार नदी के तट पर फ्रांसीसियों (डूप्ले) तथा कर्नाटक के नबाव (अनवरुद्दीन) के बीच । डूप्ले की विजय।

- **युद्ध का कारण -** डूप्ले द्वारा नवाब से किये गये वादे से पीछे हटना
- महफूज खां के नेतृत्व में दस हजार सिपाहियों की एक सेना का फ्रांसीसियों पर आक्रमण, कैप्टन पैराडाइज के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने सेंटथोमे के युद्ध में नवाब को पराजित किया।
- जून,1748 ई. में अंग्रेज रियर-एडमिरल बोस्काबेन के नेतृत्व में एक जहांजी बेडे ने पांडिचेरी को घेरा,परंतु सफलता नहीं मिली।

Note: यह प्रथम युद्ध था जिसमें किसी यूरोपीय शक्ति ने आधुनिक काल में किसी भारतीय शासक को हराया था ।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54ई.)

कारण:- 1. हैदराबाद तथा कर्नाटक राज्य में उत्तराधिकार का मुद्दा ।

हैदराबाद - हैदराबाद में उत्तराधिकार को लेकर निजाम आसफ़जाह के पुत्र -नासिर जंग और भतीजे मुजफ़्फ़रजंग (आसफजहा का पौत्र) के तथा कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन तथा उसके बहनोई चंदा साहिब के बीच विवाद । इसमें अंग्रेज तथा फ्रांसीसी भी कूद पड़े । फलत: दो गुट बन गये।डूप्ले ने चंदा साहिब तथा मुजफ्फर जंग को तथा अंग्रेजों ने अनवरुद्दीन और नासिरजंग को समर्थन प्रदान किया।

2. अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी महत्त्वाकांक्षा/प्रतिस्पर्द्धा

परिणाम:- पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।

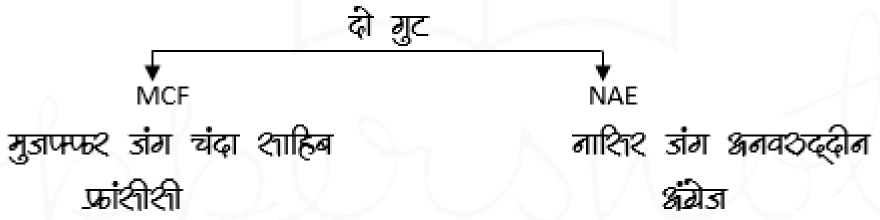

अम्बर का युद्ध (1749 ई.) -

- **1749 में** फ्रेंच सेना की सहायता से एक युद्ध में **चंदासाहब ने अंबर में अनवरुद्दीन को पराजित कर मार** डाला तथा कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों पर अधिकार कर लिया तथा चंदा साहिब कर्नाटक के अगले नवाब बने।अनवरुद्दीन का पुत्र **मुहम्मद अली** युद्ध में बचकर भाग गया और उसने **त्रिचनापल्ली** में शरण ली।
- लेकिन मुजफ्फर जंग दक्कन की सूबेदारी हेतु अपने भाई नासिर जंग से पराजित हुआ।
- 1750 में नासिर जंग भी फ्रेंच सेना से संघर्ष करता हुआ मारा गया **और मुजफ्फर जंग हैदराबाद** का नबाब बना दिया गया।
- इस समय दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों का प्रभाव चरम पर था।
- इसी बीच **राबर्ट क्लाइव** ने 1751ई. में 500 सिपाहियों के साथ धारवार पर धावा बोलकर कब्जा कर लिया।
- फ्रांसिसीयो ने चांदा साहब की सेना की साथ मिलकर दुर्ग को घेर लिया अंग्रेजो की तरफ से क्लाइव इस घेरे को तोड़ने में असफल रहा और क्लाइव ने अपनी सूझ बूझ से कर्नाटक की राजधानी अर्काट पर अधिकार कर लिया
- **1752** में **स्ट्रिगर लॉरेंस** के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने त्रिचनापल्ली को बचा लिया और फ्रांसिसी सेना ने अंग्रेजो के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और चांदा साहब की हत्या कर दी गई।
- डुप्ले को वापस बुला लिया गया तथा 1754 में **गोडेहू** अगला फ्रांसिसी गवर्नर बनकर भारत आया। पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।
- डूप्ले के बारे में **जे.और.मैरियत** ने कहा कि '**डूप्ले ने भारत की कुंजी मद्रास में तलाश कर भयानक भूल की, क्लाइव ने इसे बंगाल में खोज लिया।**

तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63 ई.)

- **कारण:** यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध का प्रारम्भ होना । तात्कालिक कारण - क्लाइव और वाट्सन द्वारा बंगाल स्थित चंद्रनगर पर अधिकार करना।
- **नेतृत्व:** फ्रांसीसी (काउण्ट लाली) एवं अंग्रेज (आयरकूट)
- **परिणाम:-** 22 जनवरी 1760 ई. के वांडीवाश के युद्ध में आयरकूट ने फ्रांसीसियों को बुरी तरह पराजित किया अंग्रजो ने भारत में अन्य यूरोपीय शक्तियों को समाप्त कर सबसे बड़ी शक्ति बनकर सामने आये अब उनका मुकाबला केवल भारतीय राजाओ से था।
- **संधि -** 1763 ई. में पेरिस की संधि द्वारा युद्ध समाप्त हुआ ।

फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की जीत के कारण

- **दोनों कम्पनियों के ढाँचे में अन्तर -** सरकार एवं निजी
- **यूरोप में फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की राजनीतिक स्थिति एवं स्थायित्व काफी मजबूत था** (पार्लियामेण्ट (अंग्रेज) एवं निरंकुश राजशाही (फ्रांस)
- ब्रिटेन में कृषि एवं **औद्योगिक क्रान्ति** के परिणामस्वरूप फ्रांस की अपेक्षा आर्थिक समृद्दि अधिक बेहतर
- हिन्द महासागर में अंग्रेजी नौसेना का काफी दबदबा। उन्होनें प्रारम्भ से ही मद्रास, बम्बई, कलकत्ता के नौसैनिक ठिकानों का विकास किया।
- फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों ने प्रारम्भ से ही **व्यापार-वाणिज्य, राजस्व प्राप्ति** पर विशेष ध्यान दिया। अंग्रेजों (क्लाइव) की बंगाल को आधार बनाकर विस्तार की रणनीति

अन्य यूरोपीय शक्ति के खिलाफ अंग्रेजी की सफलता के कारण

- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अन्य कंपनियों के विपरीत एक निजी कंपनी थी।
- ब्रिटेन के पास विशाल एवं अत्याधुनिक नौसेना होना।
- ब्रिटेन में कृषि एवं औद्योगिक क्रांति के कारण आर्थिक सम्पन्नता
- ब्रिटेन के पास एक अनुशासित और तकनिकी रूप से विकसित सेना का होना
- फ्रांस, डच आदि के विपरीत ब्रिटेन में एक स्थायी शासन की उपस्थिति
- अन्य कंपनियों की रूचि ईसाई धर्म के प्रसार में अधिक थी, जबकि अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी धर्म से ज्यादा व्यापार विस्तार में रूचि रखते थे।
- ऋण बाजार का उपयोग- **दुनिया के पहला केंद्रीय बैंक, बैंक ऑफ इंग्लैंड** की स्थापना सरकारी ऋण को मुद्रा बाजारों में बेचने के लिए की गई थी।